Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 135-139

साहित्यिक पत्र 'बखत' : अपने वक्त की पत्रकारिता

माधव सिंह राठौड़

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

हिन्दी पत्रकारिता के अध्ययन-अध्यापन में साहित्यिक पत्रकारिता की सदैव विशेष भूमिका रही है। हम हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास का क्रमबद्ध अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने आजादी से पूर्व तथा पश्चात समाज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं में लघु पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका सदैव असंदिग्ध व कालजयी रही है। गैर-व्यावसायिक व बिना किसी आर्थिक सहयोग के अपने ही स्तर पर इन लघु पत्र-पत्रिकाओं ने लेखकीय प्रतिबद्धता को निभाया हैं। अगर हम हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं के योगदान की बात करें तो एक बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है कि इन पत्र-पत्रिकाओं ने नये रचनाकारों को साहित्यिक मंच देने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। जब एक समय सेठाश्रित पत्रिकाओं की मोनोपोली की वजह से देश के छोटे व सुदूर जगहों में रहने वाले युवा लेखकों को जगह नहीं मिलती थी तब लघु पत्रिका आन्दोलन के प्रभाव से निकलने वाली इन साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने युवा रचनाकारों को साहित्य का सशक्त मंच प्रदान किया। इन साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में 'बखत' साहित्यिक पत्र का विशेष योगदान रहा है। 1985 से लेकर आज तक लगभग चालीस बरस से यह पत्र लघु पत्रिका आन्दोलन की मशाल को थामे हुए है। इसके अब तक के पांच महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय अंक में प्रत्येक अंक एक लेखक विशेष पर केन्द्रित रहे हैं। इस शोध पत्र में शोध की विश्लेषणात्मक विधि के तहत हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण साहित्यिक अख़बार 'बखत' के सारे पांचों अंकों में प्रकाशित सामग्री का विश्लेषण करते हुए उसके साहित्यिक योगदान को रेखांकित करने की कोशिश की है।

संकेताक्षर—*हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता, लघु पत्रिका आन्दोलन, रचनात्मक उजास*

प्रस्तावना

भारतीय पत्रकारिता में जिस तरह 'उदंत मार्तंड' को पहला हिन्दी का अखबार माना जाता है,ठीक इसी तरह साहित्यिक पत्रकारिता की पहली पत्रिका भारतेंदु की 'कविवचन सुधा' को माना जाता है। कालांतर में स्वतंत्रता से पूर्व तथा पश्चात कई साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रहीं, जिसने देश की जनता में चेतना के प्रसार के साथ-साथ हिन्दी भाषा का भी प्रचार किया। हिन्दी पत्रकारिता में साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ-साथ साहित्य को समर्पित कई पत्र भी निकलते रहें हैं। अगर साहित्यिक पत्रों की बात करें तो मुख्य रूप से साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान, रविवार आदि उल्लेखनीय नाम हैं। वर्तमान समय में हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाएँ तो काफी पढ़ने को मिलती हैं लेकिन शुद्ध रूप से साहित्यिक अखबार न के बराबर है। एक ऐसे समय में जब चारों तरफ यह सुनाई देता हो कि सोशल मीडिया के आने से प्रिंट मीडिया खतरे में है। एक ऐसे समय में जब अखबारों में साहित्य का स्पेस विज्ञापनों ने ले लिया हो। एक ऐसे समय में जब सोशल मीडिया के स्क्रॉल दौर में अखबार पढ़ना लगभग बंद सा हो गया हो। एक ऐसे समय में जब साहित्यिक पत्रिकाएँ धीरे-धीरे बंद हो रही हो या बंद होने के कगार पर हो। ऐसे समय में साहित्यिक पत्र निकालना काफी चुनौती भरा कार्य है।

इस लिहाज से राजस्थान से निकलने वाले साहित्यिक पत्रों की बात करें तो उनमें 'बखत', 'खबरनवीस', 'दिशाबोध', 'पोस्ट' आदि महत्वपूर्ण पत्र थे, जो पूर्णतया शिक्षा व साहित्य को समर्पित पत्र थे। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण ने लम्बे समय तक साहित्यिक पत्रकारिता की, जिसमें उन्होंने दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स जैसे अख़बारों के अलावा 'पोस्ट', 'खबरनवीस', 'बखत' जैसे शुद्ध साहित्यिक पत्रों का सम्पादन भी शामिल हैं। 1985 में डॉ. सत्यनारायण ने वरिष्ठ लेखक सवाई सिंह शेखावत के साथ मिलकर 'बखत' को निकालने की योजना बनाई थी। योजना के अनुसार इस पत्र का कोई मूल्य या शुल्क नहीं रखा गया और न ही इस पर प्रकाशन वर्ष का जिक्र किया जाता है। इसके पीछे संपादकों का शायद यह मन्तव्य रहा होगा कि साहित्य कालातीत होता है और इसकी प्रासंगिकता सदैव बनी रहती है इसलिए इसे अन्य दैनिक या साप्ताहिक पत्रों की तरह दिन,महीने,वर्ष के भीतर बांधा नहीं जाना चाहिए। जिस तरह सामान्य संगीत व शास्त्रीय संगीत में अंतर होता है ठीक वैसा ही अंतर सामान्य पत्रकारिता और साहित्यिक पत्रकारिता में होता। जहाँ दैनिक अखबार डेडलाइन से टाइम बाउंड होते हैं वहीं 'बखत' जैसे साहित्यिक पत्रों की प्रासंगिकता समय से परे सदैव बनी रहती है। जीवन में कई ऐसी चीजें होती हैं जिनका कभी कोई मूल्य तय नहीं किया जा सकता। वे हमारे साहित्य की अमूल्य विरासत होती है। इन्हें दस-बीस रुपये में खरीदा भी नहीं जा सकता।

बखत के अब तक पांच अंक निकल चुके हैं। पहला अंक राजेन्द्र बोहरा पर, दूसरा कृष्ण कल्पित पर, तीसरा विनोद पदरज पर, चौथा अंक डॉ. अर्जुन देव चारण पर तथा पाँचवाँ प्रभात पर केन्द्रित है। इस पत्र की रेखांकित करने वाली ख़ासियत यह है कि इसका पूरा अंक किसी एक लेखक पर ही समग्र रूप से केन्द्रित होता है। जिसमें उस लेखक के रचना संसार के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व से जुड़े अनछुए पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाता है। किसी एक लेखक पर एकाग्रित होने के कारण पाठक को भी इस अंक से गुजरते हुए उस लेखक को सम्पूर्णता से समझने में मदद मिलती है। इस साहित्यिक पत्र के अधिकांश अंक उन उभरते युवा रचनाकारों पर केन्द्रित थे, जिनमें उस समय 'सम्भावना के बीज' दिखाई दे रहे थे। इसलिए उस 'संभावना' को प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करने का 'बखत' ने महत्ती काम किया है।

पहले अंक के संपादकीय में 'बखत' पत्र के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. सत्यनारायण लिखते हैं—"बखत के जरिये अपने समय और साहित्य को समझने-बूझने की शुरुआत है। उगना-उगाना मिट्टी का अनिवार्य जीवन धर्म है। लेकिन आगे चलकर उस पौधे का पलना-पुसना हवा, पानी और सार संभाल पर निर्भर करता है। 'बखत' इसी आशा के साथ प्रदेश और देश की रचनात्मक उजास से जुड़ने का प्रयास है।"[1]

पहला अंक : राजेन्द्र बोहरा पर केन्द्रित

'बखत' साहित्यिक पत्र का पहला अंक उस समय के उभरते हुए महत्वपूर्ण लेखक राजेन्द्र बोहरा पर केंद्रित था। इस अंक राजेन्द्र बोहरा की कविताओं के अलावा उन के व्यक्तित्व व कवित्व पर आलोचकों के आलेख भी शामिल हैं। इस अंक के साथ ही इस साहित्यिक पत्र ने देशभर के साहित्य प्रेमियों के बीच अपनी जगह बना ली थी। हिन्दी पट्टी के साहित्यकारों, पाठकों, आलोचकों व प्रकाशकों ने लेखक केन्द्रित इस अंक को काफी सराहा था।

'बखत' ने न केवल नये रचनाकारों पर अंक निकाले बल्कि जो अच्छा लिख रहे थे लेकिन जिनका ठीक से मूल्यांकन नहीं किया जा रहा था उन पर भी ध्यान केन्द्रित किया। हालाँकि राजेन्द्र बोहरा अपने समय में बेहतरीन कविता कह रहे थे लेकिन लिखते हुए रचनाकर्मी की अनदेखी करने की परम्परा के तहत उनका कभी ठीक से मूल्यांकन नहीं हो पाया था। 'बखत' के उस अंक ने राजेंद्र बोहरा की कविताओं पर समग्र बात करते हुए उन्हें न केवल प्रदेश बल्कि हिन्दी के राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

सम्पादक सवाई सिंह शेखावत राजेन्द्र बोहरा के बारे में लिखते हैं—"उनकी कविताएँ सम्बन्धों और मनुष्य मात्र के प्रति आस्था की कविताएँ हैं। इसी आस्था भाव के साथ शोषित पीड़ित मानवता से जुड़ने की गहरी चाह व सरोकार निकलकर हमारे सामने आते हैं।"[2] यह बात न केवल कविता में बल्कि अपने इंटरव्यू में भी राजेन्द्र बोहरा कहते हैं- "रचना या साहित्य हमें मानवीय मूल्यों और परिवर्तन के प्रति कमिट कराता है और इस कमिटमेंट के कारण ही कविता महत्वपूर्ण बनती है।[3]

जब कृष्ण कल्पित व विनोद पदरज पर बखत के अंक निकले थे तब वे कविता में नए-नए ही आये थे। जैसा कि साहित्यकार अपने समय को दर्ज करता है। यही बात साहित्यिक पत्रकारिता पर भी लागू होती है। 'बखत' यानी अपने वक्त की पत्रकारिता ने उस वक्त इनके भीतर के कविता स्पार्क को पहचान लिया था।

दूसरा अंक : कृष्ण कल्पित पर समग्रित

बखत का दूसरा अंक युवा कवि कृष्ण कल्पित पर एकाग्र था। यह वह समय था जब कल्पित और उनकी कविताएँ जवानी की दहलीज़ पर कदम धर रही थी।

इस अंक में उनकी कविता, ग़ज़ल, गीत व गद्य पर बात करते हुए उनके साहित्यिक भविष्य पर महत्वपूर्ण नोट्स भी पढ़ने को मिलते हैं। उन्हें पढ़ते हुए आज अच्छे से महसूस किया जा सकता है कि उनके यहां हिंद का लोक है। जन है। वे सही मायनों में जन कवि है। उनका जन नौकरशाहों की कविताओं जैसा नहीं है बल्कि बढ़ई के बेटे का जन है। उनके यहाँ केवल राजस्थान ही नहीं है बल्कि पटना, रांची, संथाल, भोपाल, बनारस से होकर दिल्ली की रेलगाड़ी में जाते सब कवि है।

तीसरा अंक : विनोद पदरज पर केन्द्रित

'बखत' का तीसरा अंक राजस्थान के लोक को बेहद प्रभावी ढंग से लाने वाले सवाई माधोपुर के युवा कवि विनोद पदरज पर केन्द्रित था। इस अंक में आलोचक जीवन सिंह लिखते हैं—"विनोद पदरज अभी अपना प्रारंभ कर रहे हैं। वे आगे चलकर कोई भी रूप ले सकते हैं, किंतु हिन्दी कविता की प्रकृति का जो बीज अंकुरण उनकी कविता में है, उससे यही आशा और विश्वास बनता है कि उन्होंने कविता की अपनी जमीन को पहचाना है। कविता के लिए 'अपनी जमीन पहचान लेना' सबसे पहली शर्त है। जिसे अधिकांश रचनाकार नहीं पहचान पाते और वे बहुत सतही एवं किताबी स्तर पर कविता के साथ धींगा मस्ती करते रहते हैं।

वे आगे लिखते हैं—मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि विनोद पदरज की अपनी जमीन है। वह अभी बीज रुप में ही है किंतु वह है। तभी तो वह अपने आसपास के संसार में उन क्रियाओं को सहज पकड़ लेते हैं, जो न केवल मनुष्य के आत्मीय भाव को दिखलाती हैं बल्कि स्थानीयता की अपनी जमीन को भी प्रस्तुत करती हैं।"[4]

जीवन सिंह की उस समय की कई गई यह भविष्यवाणी आज 2024 में बेहद सटीक व खरी उतरी है। इस समय हिन्दी कविता में विनोद पदरज लोक को रचने वाले अनूठे व अद्भुत कवि है। जिनकी कविताओं को पूरे देश भर में आलोचक अलग ढंग से देखते हैं।

चौथा अंक : राजस्थानी के कवि अर्जुन देव चारण पर एकाग्रित

इस पत्र के अब तक के तीन अंक हिन्दी रचनाकारों पर केन्द्रित थे। चौथा अंक राजस्थानी के पुरोधा डॉ. अर्जुन देव चारण पर एकाग्र है। इस अंक के संपादकीय में सत्यनारायण लिखते हैं—"हिन्दी राजस्थानी दोनों भाषाओं में 'बखत' का यह सिलसिला जारी रहेगा।"[5] इससे यह स्पष्ट होता है कि इस पत्र ने न केवल हिन्दी बल्कि राजस्थानी भाषा में अच्छा लिखने वालों की तरफ भी अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

डॉ. अर्जुनदेव ने कविता, नाटक व आलोचना के माध्यम से राजस्थान व राजस्थानी साहित्य को एक नई ऊंचाई दी है। लेकिन अर्जुनदेव अपने लिखे हुए पर,अपने आसपास के समय, समाज और साहित्य को कैसे देखते हैं। यह सब इस अंक को पढ़ते हुए और भी बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। उन्होंने हिन्दी एवं राजस्थानी में दो दर्जन से ज्यादा नाटक लिखे हैं और राजस्थानी के इन नाटकों में से अनेक का देश भर में प्रदर्शन हुआ है। अर्जुनदेव का राजस्थानी भाषा में आलोचना को गंभीर विमर्श के रूप में प्रतिष्ठित करने में उल्लेखनीय योगदान है।

इस अंक में उनके तीन लंबे साक्षात्कार और कविताएँ हैं। साक्षात्कार राजेश कुमार व्यास, मंगत बादल और हरीश बी शर्मा ने लिए हैं। अर्जुनदेव से उनकी 'रिंधरोही' से लेकर 'अकथ री लिपि' तक कविता यात्रा पर मंगत बादल ने बहुत संजीदा व गहरी बात की है। अर्जुन देव के बारे में हरीश बी.शर्मा लिखते हैं—"राजस्थानी साहित्य के आधुनिक काल से डॉ. अर्जुन देव चारण को टालकर बात शुरू नहीं हो सकती। सहमति असहमति दूसरी बात है लेकिन इन्हें नजरंदाज करना बहुत मुश्किल है। उनका अध्ययन है, अनुभव है या आनुवांशिकी कुछ भी हो। अर्जुन देव चारण परिभाषाओं से परे हैं। हर बार नये हैं, हर हाल में खरे हैं।"[6]

अर्जुनदेव न केवल बेहतरीन कवि बल्कि नाट्यशास्त्र के मर्मज्ञ भी हैं। उनसे नाटक विधा पर लम्बी व सार्थक बातचीत डॉ.

राजेश कुमार व्यास ने की है। नाट्यशास्त्र के संदर्भ में डॉ. अर्जुनदेव कहते हैं—"भारतीय परंपरा में 'नाट्य' सिर्फ एक कला रूप तक ही सीमित नहीं रहता, वह समग्र जीवन को अपने में समेटे खड़ा है बल्कि उससे भी आगे बढ़कर यह कहा जा सकता है कि यह परंपरा पूरी सृष्टि की चिंता करती है और इस रूप में यह भारतीय ज्ञान परंपरा को 'आनंद' के माध्यम से समझने पर बल देती है।"[7] इस पूरे अंक से गुजरते हुए एक स्पष्ट होता है कि उनके यहां असंतोष, प्रतिरोध और चेतना का जो स्वर है वह अपने समय का सच है। रचनाकार अपने समय को अपनी रचना के माध्यम से प्रकट करने की कोशिश करता है।

इस सम्बन्ध में डॉ. अर्जुनदेव लिखते हैं—"अनादि काल से साहित्यकार व्यवस्था के प्रतिरोध में खड़ा रहता है लेकिन यह प्रतिरोध किसी राजनीतिक दल का प्रतिरोध नहीं है। यह तो मानवता के विरुद्ध व्यवस्था का खड़ा किया हुआ जो प्रपंच है उसका विरोध है।"[8] हालाँकि इस अंक में अर्जुनदेव के साक्षात्कार पढ़ने के बाद आलोचक राजाराम भादू उनके द्वारा दिए गये जवाबों से असहमति जताते हुए कहते हैं— "मंगत बादल ने 'अगनसिनान' की स्त्री-केन्द्रित लंबी कविताओं तथा कुछ और लंबी कविताओं को नृत्य- नाटिका जैसी बताते हुए सवाल किया है। अर्जुन देव के प्रत्युत्तर के बावजूद सवाल अपनी जगह लगभग बना रहता है।"[9]

पाँचवाँ अंक : कवि प्रभात पर केन्द्रित

बखत का पाँचवाँ अंक हिंदी की बेहद चेहते कवि प्रभात पर केंद्रित है। प्रभात लोक के नैसर्गिक कवि है। अपनी तरल भाषा से लोक के जीवन की संवेदनाओं को विस्तार देते हैं। अरुण कमल प्रभात को पढ़ते हुए लिखते हैं—"जिस प्रेम, मार्मिकता और अश्रु सिक्त आंखों से प्रभात ने इस जीवन को देखा है वह हमारा कलेजा काढ़ लेने को काफी है। बेहद सधे हुए, संयमित, कंपन रहित स्वर में उन्होंने दुख और संताप की गाथा का गान किया है।"[10]

इस अंक में प्रभात से उनके मित्र प्रमोद तिवारी और विश्वम्भर ने आज के समय समाज और साहित्य के साथ-साथ उनके बाल साहित्य पर भी लंबी बातचीत की है। इस अंक में प्रभात की कुछ कविताएँ, कुछ बाल कविताएँ,एक कहानी व उनका आत्मकथ्य भी शामिल हैं। इसके अलावा प्रभात व उनके रचना संसार पर विनोद पदरज, राजाराम भादू, गिरिराज किराडू के महत्वपूर्ण आलेख भी हैं, जिनसे गुजरते हुए हम प्रभात को और ज्यादा करीब से समझ सकते हैं। अपनी रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए कवि प्रभात लिखते हैं—

"इस तरह हिन्दी के महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्र के अंकों को पढ़ते हुए कह सकते हैं कि जो विचार लघु पत्रिका आन्दोलन के समय निकला था वह आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।"[11]

'बखत' के प्रत्येक अंक का न केवल प्रदेश में बल्कि पूरे देश भर में भरपूर स्वागत किया गया। अंग्रेजी के प्रसिद्ध समाचार पत्र हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस व हिन्दी में नवभारत टाइम्स ,राजस्थान पत्रिका,दैनिक भास्कर,दैनिक नवज्योति सहित कई पत्र-पत्रिकाओं में इस पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ छपीं। हिन्दी के महत्वपूर्ण लेखकों,समीक्षकों,संपादकों ने माना कि बखत अपने तरह का शुद्ध रूप से पहला साहित्यिक अखबार है।

'बखत' के पहले अंक को पढ़ते हुए वरिष्ठ साहित्यकार मान बहादुर सिंह लिखते हैं – "आज जब एक साजिश के तहत स्वस्थ साहित्य का प्रकाशन मुश्किल और असंभव हो रहा है, ऐसे में आपकी तरह प्रयोग के स्तर पर इस तरह का पत्र निकालना वास्तव में सही है। साहित्य में आज बहुत कुछ गलत और भ्रम फैलाने वाली चीजें भी आ रही हैं। उसे पहचानें और लड़ें। राजस्थान से आई आपकी पत्रिका इसलिए भी प्यारी लगी कि दूरदराज जगहों में भी लोग वही हलचल महसूस कर रहे हैं जो हम अपने आसपास कर रहे हैं।"[12] इसी तरह इसके चौथे अंक पर प्रतिक्रिया देते हुए गुजरात से गोपाल सहर लिखते हैं—"बखत के इस अंक से गुजरने के बाद यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि संवाद के जरिए जो बातें खुलकर सामने आती हैं वह किसी साहित्यकार पर बैठकर लिखे गए आलेखों में नहीं आती हैं।"[13] इनके अलावा वरिष्ठ साहित्यकार विजेन्द्र, मैनजेर पाण्डेय, डॉ. कृष्ण बिहारी सहल, जुगमन्दिर तायल सहित देशभर के साहित्यकारों ने बखत पर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया दी थी।

निष्कर्ष

इन अंकों को पढ़ते हुए लगता है कि 'बखत' के ये अंक साहित्यिक पत्रकारिता के लिहाज से अमूल्य व संग्रहणीय हैं। सेकंड वर्ल्ड वॉर के समय हेमिंग्वे ने आज की पत्रकारिता को जल्दी में लिखा गया साहित्य और साहित्य को जल्दी में लिखी गई पत्रकारिता कहा था लेकिन 'बखत' जैसे अंक अपने मास्टर्स के द्वारा खींची हुई सीमाओं का अतिक्रमण कर नए प्रतिमान स्थापित करते हैं। जैसा कि इस समय चारों तरफ यह

हल्ला हो रहा है कि ओपन ए.आई. के दौर में चैट जी.पी.टी. के आने से हजारों पत्रकार, प्रोफेसर्स, प्रोग्रामर्स, डिजायनर अपनी नौकरी खो देंगे।। एक ही क्लिक में वह रोबोट एप आपको कविता, गीत, उपन्यास लिखकर दे देगा।

तब ऐसे समय के बारे में संवेदनशील मनुष्य के भविष्य की चिंता करते हुए हमारे समय के महत्वपूर्ण कहानीकार उदय प्रकाश कहते हैं— "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा ने मनुष्य को न केवल विस्थापित किया है बल्कि पहले के दौर की तुलना में अधिक अकेला, डरा हुआ और असहाय भी बनाया है। सीधे कहूं तो मनुष्य को हैक किया जा चुका है।"[14] ऐसे समय में 'बखत' जैसे साहित्यिक पत्रों का निकलना निश्चित रूप से अपने वक्त की जरूरत को पूरा करते हैं। यह पत्र टेब्लाइड फ़ॉर्मेट में प्रकाशित होता है इस सम्बन्ध में आलोचक राजाराम भादू लिखते हैं—"'बखत' अपने रूपाकार में ही टेब्लाइड अखबार है, विषयवस्तु के लिहाज से तो साहित्यिक पत्रिकाओं जैसा ही है। पिछले दशकों से तो व्यक्ति- रचनाकार केन्द्रित पत्रिकाओं के अंकों का अनवरत क्रम चल रहा है। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। लेकिन सत्यनारायण को यही फोर्मेट और प्रस्तुति का ढंग (एक रचानाकार पर केन्द्रित) रुचता है। बेशक, इस फोर्मेट में प्रस्तुति को आकर्षक बनाने में वे अपनी खास दृष्टि रखते हैं।"[15]

सजग पाठक दीप्ति गुप्ता साहित्यिक पत्रों की महत्ता को रेखांकित करते हुए उसको निकालने में आने वाली दिक्कतों पर लिखती हैं—"अख़बार निकालना कोई आसान काम नहीं। धन सबसे बड़ा उपादान है। उसको लेकर अनेक समस्यायें और बाधाएँ सामने आती हैं। इंसान के पास परिकल्पना हो और यथेष्ट सामग्री भी, पर, धन न हो, तो उत्साही सम्पादक/प्रकाशक को दस, बीस, तीस वर्षों तक भी नया अंक लाने की खुशनुमा घड़ी का इंतज़ार करना पड़ता है। ऐसी ही कोई बाधा, अड़चन सत्यनारायण जी के साथ रही होगी।"[16]

इस तरह 'बखत' के इन अंकों से गुजरते हुए कह सकते हैं इस पत्र ने अपने सीमित संसाधनों के बावजूद भी लघु पत्रिका आन्दोलन की भावना सतत बनाये रखते हुए नये रचनाकारों को मंच देते हुए तथा श्रेष्ठ साहित्य जनमानस तक पहुंचा कर उसमें चेतना की भावना को विकसित करने की सार्थक कोशिश की है। जो बात लघु पत्रिकाओं के भविष्य के बारे में संपादक हेतु भारद्वाज अपने साक्षात्कार में कहते हैं, वही बात 'बखत' जैसे साहित्यिक पत्रों पर भी प्रत्यक्षतः लागू होती है—"1960 के बाद की लघु पत्रिकाएँ साहित्य के साथ-साथ प्रतिरोध की भावना से निकाली गई। इनका लक्ष्य आर्थिक लाभ कमाना कभी नहीं रहा। इनका काम था—मानव विरोधी शक्तियों के खिलाफ एक बौद्धिक माहौल तैयार करना। यह इन पत्रिकाओं ने बखूबी किया। लघु पत्रिकाओं की धारा अनवरत बही है। हमारा यह विश्वास है कि एक लघु पत्रिका बंद होगी तो दूसरी आ जाएगी। यह भी हम जानते हैं कि कोई लघु पत्रिका अनंतकाल तक चलने वाली नहीं है। परंतु यह भी सत्य है कि यह धारा शाश्वत चलने वाली है। यह पत्रिकाएँ प्रतिरोध को मरने नहीं देगी और मानवीय शक्तियों से लड़ने की मुहिम जारी रहेगी—

मंजिल मिले, ना मिले इसका गम नहीं।

मंजिल की जुस्तजू में मेरा कारवां तो है।"[17]

सन्दर्भ सूची

1. बखत साहित्यिक पत्र, अंक प्रथम, अप्रकाशित, पृ.सं. 1
2. उपर्युक्त, पृ.सं. 3
3. उपर्युक्त, पृ.सं. 4
4. बखत साहित्यिक पत्र, अंक तीसरा, अप्रकाशित, पृ.सं. 6
5. बखत साहित्यिक पत्र, अंक चौथा, अप्रकाशित, पृ.सं. 1
6. उपर्युक्त, पृ.सं. 12
7. उपर्युक्त, पृ.सं. 19
8. उपर्युक्त, पृ.सं. 23
9. बखत साहित्यिक पत्र, अंक पाँचवाँ, अप्रकाशित, पृ.सं. 14
10. प्रभात,अपनों में नहीं रह पाने का गीत, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2014, पृ.सं. 7
11. बखत साहित्यिक पत्र, अंक पाँचवाँ, अप्रकाशित, पृ.सं. 9
12. बखत साहित्यिक पत्र, अंक दूसरा, अप्रकाशित, पृ.सं. 5
13. बखत साहित्यिक पत्र, अंक पाँचवाँ, अप्रकाशित, पृ.सं. 19
14. कथादेश पत्रिका (सं. हरिनारायण), दिसम्बर 2022, पृ.सं. 47
15. बखत साहित्यिक पत्र, अंक पाँचवाँ, अप्रकाशित, पृ.सं. 19
16. उपर्युक्त, पृ.सं. 19
17. भारद्वाज, हेतु, एक और अंतरीप पत्रिका (सं. प्रेमकृष्ण शर्मा), एकाग्र विशेषांक 24, अप्रैल-जून 2017, पृ.सं. 240